सड़ता शिक्षा तंत्र उभरते सवाल

शिवशंकर

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में शिक्षा का क्षेत्र पूर्णतः उपेक्षित हो गया। शिक्षा का व्यवसायीकरण हुआ। शिक्षा को अधिक से अधिक धनोपार्जन का माध्यम बनाने का प्रयास हुआ। बेकारी, बेरोजगारी को रोकने के लिए सतत प्रतियोगी परीक्षाओं की बाढ़–सी आ गई। उच्च शिक्षा के मूल ढांचे में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। सुप्रसिद्ध शिक्षाविदों ने एकमत से इस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा, "भारत की वर्तमान प्रशासनिक–शैक्षिक व्यवस्था औपनिवेशिक तंत्र की अनुकृति है जिसे एक विशेष शोषणकारी उद्देश्य से बनाया गया है। इससे गाँव व समाज टूटा है, निःस्वत्व हुआ है।

हमारी शिक्षा–प्रणाली एक सड़ता हुआ आम है जिसे आप न चाहते हुए भी खाना चाहते हैं। आज हमारे शिक्षा–प्रणाली में व्यक्तित्व निर्माण के कोई तत्व मौजूद नहीं हैं सिर्फ छात्रों को मशीन बनाने में ही सारी ऊर्जा लगा दी जा रही है। हमारे शिक्षा–तंत्र की कुछ चिंतनीय कमियां हैं, जो उसे गर्त में धकेल रही है। शिक्षा–प्रणाली में क्या बदलाव हो? स्वतंत्रता के समय सूचनाओं का सम्प्रेषण बहुत महंगा था, अतः उस समय याद्दाश्त पर आधारित शिक्षा की आवश्यकता थी, उस समय शिक्षा में याद्दाश्त का बहुत महत्व था। इस कारण उस पर आधारित शिक्षा–तंत्र विकसित हुआ। बच्चों को प्रश्नों को याद करना होता था एवं लिखने पर अच्छे अंक मिलते थे। उस समय जो व्यक्ति ज्यादा जल्दी एवं तेजी से याद कर सकता था, वह सफल माना जाता था। किन्तु वर्तमान में सूचना सम्प्रेषण बहुत सस्ता है। दूरसंचार एवं इंटरनेट ने सूचनाओं का सम्प्रेषण बहुत सस्ता एवं गतिशील बना दिया है। अतः आज के संदर्भ में पुरानी याद्दाश्त पर आधारित शिक्षातंत्र की प्रासंगिकता खत्म हो चुकी है।